8. चोर कौन?

एक बार हम एक नई आईआईएम की साइट चयन यात्रा के लिए रांची से धनबाद तक जा रहे थे। हमने एक बड़ी संख्या में लोगों को जूट के एक एक बड़े थैले में (जिसमे अक्सर गेहूं ले जाया जाता है) साइकिल पर लादकर कोयला ले जाते देखा।वे थैलों को साइकिल के दोनों और लटका कर नाज़ुक संतुलन बना कर चल रहे थे।सड़क उतार चढ़ाओ वाली थी।ढलान आने पर वे साइकिल पर सवार हो जाते थे और चढ़ाई आने पर उतर कर साइकिल खींचने लगते थे। एक ओर लकड़ी की एकछड़ी लगी थी, जिसे एक स्टैंड के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। यह एक या दो उदाहरण नहींथे हमने रास्ते में दर्जनों ऐसे लोग देखे।

वे समूहों में नहीं थे, बल्कि अपने अपने थैले लेकर अलग अलग चल रहे थे। वे थके हुए थे और पसीने से लथपथ भी। हम, "बाहरी", लोगों ने साथ चल रहे मेज़बानों से पूछा किवे कौन लोग हैं, जो इस तरह से कोयला ले जा रहे हैं। "ये लोग", मेजबान ने कहा, "एक तरह से अवैध खनन, खुले मैदानों से कोयले की खुदाई करते हैं और लंबी दूरी तक चलना शुरूकरते हैं, कभी कभी लगभग 100 किलोमीटर तक। रास्ते में गांवों में जरूरतमंद ग्राहकों को छोटी छोटी मात्रा बेचकर परिवार चलाने के लिए कुछ पैसा कमाते हैं। वे घर तब लौटते हैं जब पूरा बैग बिक जाता है। जिसमे एक दिन से 5 दिन लग सकते हैं।"

"चोर", "कोयला चोरी" टीम के विशेषज्ञों में से एक चिल्लाया।

हमारे वाहन का चालक, जो चुपचाप हमें इतनी दूर तक शांतिपूर्वक सुन रहा था अब अपना आप खो कर चिल्लाया "वे चोर नहीं हैं कड़ी मेहनत के साथ वे कुछ कोयला खोदते हैं और उसे ज़रूरतमंद लोगो को कम से कम दामों पर मुहैय्या कर अपने परिवार के भोजन के लिए कुछ पैसे कमाकर घर लौटने के लिए लंबी दूरी चलते हैं। आखिरकार, ग्रामीणों, ढाबावालों आदि को कोयला कम से कम कीमतों पर मिलता है। "कोयले को खानों से बाहर ले आना और किसी ग्राहकों को देना", बड़ी कंपनियों और सरकार कम्पनियाँ भी तो यही काम ही करती हैं। एकमात्र अंतर यह है कि उपभोगता उसे 5-10 गुना अधिक कीमत पर खरीदते हैं। ये लोग भारी मुनाफा नहीं कमा सकते क्योंकि वे बड़ी मात्रा में उत्खनन नहीं कर सकते हैं, और ना ही ले जाकर उच्च कीमत पर बेच सकते हैं"।

मैं सोचने लगा कि क्या चोर वे हैं या कुछ बड़े कॉरपोरेट, जो एक संगठित तरीके से ऐसी चीजों को करते हैं। श्रम के लिए कम भुगतान करते हैं, ग्राहकों से उच्च मूल्य लेकर अप्रत्याशित लाभ कमाते हैं। आखिर "चोर और गैर चोर" की सीमांकन रेखा क्या है?